



Original Article

21 वीं सदी के साहित्य में चित्रित महानगरीय समस्या (डार्क हॉर्स उपन्यास के संदर्भ में)

डॉ. वंदना मोहिते

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग

डी.पी. भोसले कॉलेज, कोरेगांव.

Manuscript ID:

IJAAR-C130357

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 288 - 291

Submitted: 04 Feb. 2026

Revised: 12 Feb. 2026

Accepted: 15 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

डॉ. वंदना मोहिते

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22786712

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22786712>



Creative Commons



प्रस्तावना:

21 वीं सदी का साहित्य:

21वीं सदी का साहित्य और 20 वीं सदी का साहित्य इसमें कैसे देखा जाये तो कोई निश्चित सीमा-रेखा खींचकर हम नहीं बता सकते कि दोनों साहित्य में इस-इस प्रकार का बदलाव आया है। परंतु धीरे धीरे क्यूँ ना हो लेकिन आतीत का साहित्य और भविष्य का साहित्य इसमें नई-नई बातें आई हुई दिखाई देती हैं। इसमें वैश्वीकरण के कारण लोक एक दुसरे के करीब आते दिखाई देते हैं। इसके फलस्वरूप साहित्य के अलग-अलग प्रकार की संस्कृति हमें देखने को मिलती है। उसी प्रकार महिला वर्ग की जो समस्या है ये भी विस्तारित रूप से देखी जा रही है। इंटरनेट और टेक्निकल विकास के कारण ऑनलाइन रूप में भी साहित्य का विकास हमें देखने को मिल रहा है। इसके साथ-साथ पर्यावरण, दलित साहित्य, इस पर खुलेआम विचार व्यक्त हो रहे हैं। अर्थात् पिछड़े वर्ग की समस्या को साहित्य के माध्यम से और भी खुलकर दिखाया गया है। इसके साथ-साथ वर्तमान में जो बेरोजगारी, आतंकवाद, भ्रष्टाचार आदि का विवरण भी साहित्य के माध्यम से दिखाया जा रहा है। इसके साथ-साथ साहित्य की भाषा आतीत से अधिक सरल और प्रवाहमयी होती दिखाई देती जा रही है। अतः ऐसी अनेक बातों की दृष्टि से 21 वीं सदी का साहित्य प्रगति की ओर बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. वंदना मोहिते. (2026). 21 वीं सदी के साहित्य में चित्रित महानगरीय समस्या (डार्क हॉर्स उपन्यास के संदर्भ में). *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 288 - 291. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22786712>

साहित्य का स्वरूप:

‘साहित्य’ शब्द का अर्थ इस शब्द में साहित्य है क्योंकि स + हित का मतलब है, समाज हित की दृष्टि से जो

लिखा जाता है, उसे साहित्य कहते हैं। साहित्य समाज से ही निर्माण होता है। और समाज को ही लाभदायी होता है। क्योंकि साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से विभिन्न विषयों को



स्पर्श करता है. और समाज में बदलाव लाना चाहता है. साहित्यकार अपने भाव, विचार और कल्पना के माध्यम से समाज की समस्या हो या किसी का व्यक्तिगत जीवन हो, निसर्ग हो, राष्ट्रप्रेम की भावना, देशभक्ती के भावना, आदि अनेक विषय को स्पर्श करते हुए, एक नया विचार समाज को देने का कार्य करता है. आतः साहित्य के आधार पर ही फिल्म सिरीयल बनाये जाते हैं. और इसका एक मात्र उद्देश्य रहता है कि समाज में परिवर्तन या बदलाव आ जाय. मैंने जिस उपन्यास को चुना है उसके लेखक निलोत्पल मृणाल का भी वही उद्देश्य है कि व्यक्ति अपने जीवन में कितनी बार भी अपयशी हो जाये तो हारकर खुदखुशी नहीं करनी चाहिये. और आज की पिढी के लिए ये विचार बहुत ही उपयोगी है. क्योंकि आज की पिढी मोबाईल, सोशल मीडिया में इतनी अटकी हुई है की खुदका विचार नहीं करती, भटक जाती है और स्कूल कॉलेज में या किसी भी क्षेत्र में अपयश आने के बाद खुसखुशी कर लेती है ऐसे लोगों के दिमाग में प्रकाश डालने का कार्य भी साहित्य करता है. और डार्क हॉर्स इसका ही साक्षात उदाहरण है.

डार्क हॉर्स उपन्यास की सभी समस्याएं:

डार्क हॉर्स उपन्यास में बहुत सारी समस्याएं हैं इसमें आर्थिक समस्या, पारिवारिक समस्या, खानपान की समस्या, कोचिंग क्लास की समस्या, रिश्तेदारों की समस्या, अंधविश्वास की समस्या, कमरे की समस्या, आदि अनेक समस्या हैं. इनका बेखुबे से वर्णित किया है. वाचक को पढ़ते समय ऐसे लगता है की सच में मैं इन समस्याओं को हर दिन झेलता हूँ. इसी का लेखा - जोखा उपन्यासकार ने दिया है. स्वयं लेखक ने भी आठ वर्ष सिविल सेवा की परीक्षा दी, परंतु अपयशी होने के बाद उन्होंने लेखन का सहारा लेकर समाज के कई सारे मुद्दों

को लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया, और जितना हो सके युवा पिढी खुदखुशी करना या और बुरे तरीकों को अपना कर अपना जीवन समाप्त करने वालों को यह कथा एक संजीवनी है. और इस उपन्यास से यह सिख भी मिलती है कि समाज में किस प्रकार रहना चाहिए, अनेक संकटों का सामना करते हुए अपने जीवन को किस प्रकार सही मार्ग पर लाना चाहिए.

डार्क हॉर्स उपन्यास में महानगरीय समस्या:

लेखक ने इस उपन्यास के माध्यम से एक मध्यवर्गीय परिवार को रेखांकित किया है. इसका मुख्य नायक संतोष है. जो विनायक और कमलादेवी का बेटा है. विनायक संतोष के पिता अध्यापक थे. और उनकी इच्छा थी की बेटा सिविल सेवा की परीक्षा देकर एक अच्छा आय ए एस अधिकारी बने. जिसके कारण अपने बेटे को दिल्ली के मुखर्जी नगर में भेजते हैं परंतु संतोष एक मध्यवर्गीय परिवार का गांव का लडका जब शहर जाता है, तो उसे सब सफर में रेल की समस्या से लेकर शहर की अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है. वे निम्नलिखित रूप से वर्णित हैं.

शैक्षिक समस्या:- संतोष का गांव एक देहा था वहां केवल हिंदी माध्यम से ही प्राथमिक शिक्षा लेने पड़ती थी और यदि अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई करनी है तो छात्रों को भागलपुर जाना पड़ता था.

कमरे की और प्रॉपर्टी डीलर की समस्या:

संतोष डुमरी गांव से पढ़ने के लिए दिल्ली मुखर्जी नगर में जाता है. तो उसे सबसे पहले कमरे की समस्या से सामना करना पड़ता है क्योंकि प्रॉपर्टी डीलर पैसा लेकर भी उनके साथ उलटी सीधी बातें करता है. संतोष जब सस्ते रूम के बारे में कहता है, तो प्रॉपर्टी डीलर उसे भली बुरी बातें सुनवाता



हैं -"चोबीसो घंटे एंट्री, छोरी लाओ, दारू पियो, कोई गलत नहीं, बोलो जल्दी लेनी है?"^१ एक कमरे में जादा से ज्यादा लडके रहते है वॉशरूम बाथरूम सब एक ही और कमरे में बहुत गंदगी रहती है .ये सब देखकर डीलर की बाते सुनकर संतोष गुस्से मे कहता है-"साला कितना हरामी है यहाँ प्रॉपर्टी डीलर, लडकी लाओगे कहता है, साला भागलपुर , पटना होता तो काट देते"^२

दुर्गंधी की समस्या:

संतोष जब दिल्ली जाने निकला तो उसे ट्रेन से लेकर कमरे तक इस समस्या का सामना करना पडता है. सबके साथ संतोष दोस्त के कमरे में जाता है ,तो इतनी दुर्गंध आती है कि जैसे लगता है भागलपूर की सड़ी हुई सब्जी मंडी की आती है. एक तो वॉशरूम कॉमन, सार्वजनिक शौचालय जिसे संतोष उब जाता है.

सांस्कृतिक समस्या:

शहर और गाव मे हर चीज मे भिन्नता दिखायी देती है. संतोष जब दिल्ली जाता है तो वहां के लडके देखता है. तो सब गलत माहोल दिखाई देता है. मनोहर के चाचा जब दिल्ली आते है तो वह चाचाजी से तमीज से बाते नहीं करता. शहरी लडकों का बडों के सामने नशा करना, शराब पीना ये सब अलग ही लगता है. लडके लडकियों का खुलेआम घुमना एक दुसरे से बाते करना ये सब ग्रामीण संस्कृति से भिन्न दिखाई देता है.

आर्थिक समस्या:

दिल्ली मे रहना, वहां का किराया खान- पान कोचिंग क्लास सबके लिए संतोष के पिता कर्जा लेकर पैसा भेजते है.

संतोष का मित्र जावेद के घर वाले भी जमीन बेच देते है. इसी कारण संतोष जब फेल हो जाता है ,तो वो सुसाईड करने जाता है. लेकिन उसका दोस्त गुरु उसे बचाकर वापीस लाता है . दो तीन बार ट्राय करने से भी संतोष को यश नहीं मिलता तो उसके पापा कहते है "देख बेटा हमसे जितना भी बन पाया हम किये तुम्हारे लिये कर्जा पैसा सब लिये अब भाग्य से ज्यादा किसी को कुछ नहीं मिलता."^३ ये सुनकर संतोष हताश हो जाता है.

अंधविश्वास की समस्या:

गाव से गए लडके जो आय. ए. एस की तयारी करने के लिए शहर जाते है तो वे अपनी सफलता - असफलता को लेकर भाग्य की बाते करते है. परिवार वाले भी भाग्य कुंडली देखते है संतोष तो कॉलेज के पहले दिन काला कपडा पहनकर नहीं जाता .हर रोज हनुमान चालीसा का पाठ करता हैं . पूजापाठ हर रोज करता हैं , तिलक लगाता है, पुखराज की अंगुठी पहनता है, जख बाबा की बभूत साथ मे रखता है. परीक्षा के लिए जब हॉल मे चला जाता है तो बाहर ही दादी ने दी अक्षता छीटका देत हैं .अतः यहाँ पुरी तरह से लेखक ने अंधविश्वास का निपटारा करने की कोशिश की है.

निष्कर्ष:

निष्कर्ष रूप से कहा जय तो 21वीं सदी का साहित्य और २० वीं सदी का साहित्य इसमे वैसे देखा जाये तो कोई निश्चित सीमा-रेखा खींचकर कर हम नहीं बता सकते की दोनो साहित्य मे इस-इस प्रकार का बदलाव आया है. परंतु धीरे धीरे क्यू ना हो लेकिन आतीत का साहित्य और भविष्य का साहित्य इसमे नई- नई बाते आई हुई दिखाई देती है. इसमे वैश्विकरण के कारण लोक एक दुसरे के करीब आते दिखाई देते है. इसके फलस्वरूप साहित्य के अलग- अलग प्रकार की संस्कृति हमे



देखने को मिलती है. उसी प्रकार महिला वर्ग की जो समस्या है ये भी विस्तारित रूप से देखी जा रही है .मैने जिस उपन्यास को चुना है उसके लेखक नीलोत्पल मृणाल का भी वही उद्देश है कि व्यक्ति अपने जीवन में कितनी बार भी अपयशी हो जाये तो हारकर खुदखुशी नहीं करनी चाहिये. और आज की पिढी के लिए ये विचार बहुत ही उपयोगी है. क्योंकि आज की पिढी मोबाईल, सोशल मीडिया में इतनी अटकी हुई है की खुदका विचार नहीं करती , भटक जाती है और स्कूल कॉलेज में या किसी भी क्षेत्र में अपयश आने के बाद खुदखुशी कर लेती है .ऐसे लोगों के दिमाग में प्रकाश डालने का कार्य भी साहित्य करता है .और डार्क हॉर्स इसका ही साक्षात उदाहरण है डार्क हॉर्स उपन्यास में बहुत सारी समस्याएं है इसमें आर्थिक समस्या, पारिवारिक समस्या, खानपान की समस्या, कोचिंग क्लास की समस्या, रिश्तेदारों की समस्या, अंधविश्वास की समस्या, कमरे की समस्या ,आदी अनेक समस्या हैं . इनका बेखुबे से वर्णित किया है. वाचक को पढ़ते समय ऐसे लगता है की सच में मैं इन समस्याओं को हर दिन झेलता हूँ. इसी का लेखा - जोखा उपन्यासकार ने दिया है. संतोष डुमरी गाव से पढ़ने के लिए दिल्ली मुखर्जी नगर में जाता है. तो उसे सबसे पहले कमरे की समस्या से सामना करना पड़ता है क्योंकि

प्रॉपर्टी डीलर पैसा लेकर भी उनके साथ उलटी सीधी बातें करता है. संतोष जब दिल्ली जाने निकला तो उसे ट्रेन से लेकर कमरे तक दुर्घंधी की समस्या का सामना करना पड़ता है. शहर और गाव में हर चीज में भिन्नता दिखायी देती है. संतोष जब दिल्ली जाता है तो वहां के लडके देखता है. तो सब गलत माहोल दिखाई देता है. मनोहर के चाचा जब दिल्ली आते हैं तो वह चाचाजी से तमीज से बातें नहीं करता. गाव से गए लडके जो आय. ए. एस की तयारी करने के लिए शहर जाते हैं तो वे अपनी सफलता - असफलता को लेकर भाग्य की बातें करते हैं. परिवार वाले भी भाग्य कुंडली देखते हैं संतोष तो कॉलेज के पहले दिन काला कपड़ा पहनकर नहीं जाता .हर रोज हनुमान चालीसा का पाठ करता हैं . पूजापाठ हर रोज करता हैं , तिलक लगाता है, पुखराज की अंगुठी पहनता है,अतःनीलोत्पल मृणाल ने एक प्रकार से आज की नई पीढ़ी को जागृत करने का कार्य इस उपन्यास के माध्यम से किया हैं.

संदर्भ ग्रन्थ सूचि:

1. नीलोत्पल मृणाल-डार्क हॉर्स, पृष्ठ -३६
2. नीलोत्पल मृणाल-डार्क हॉर्स, पृष्ठ -३७
3. नीलोत्पल मृणाल-डार्क हॉर्स, पृष्ठ -१६३